राष्ट्रीय सागर | झारखण्ड | शनिवार | रांची, 08 नवंबर 2014

प्राकृतिक जलस्रोत की कीमत पर नई जल-व्यवस्था

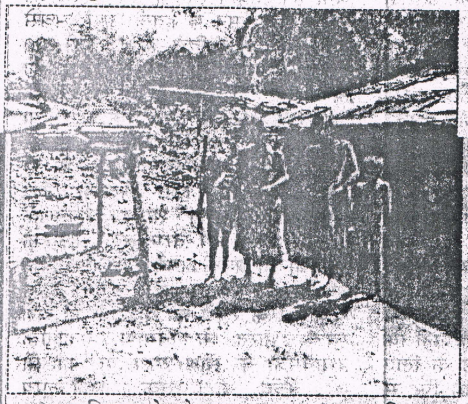

- जसिन्ता केरकेट्टा

आदिम जनजाति पहाड़ियाओं के संसाधनों की लूट जारी है। पहाड़ों के उत्खनन के कारण पहाड़ों में जल के स्रोत खत्म हो रहे हैं। झरनों का अस्तित्व खत्म हो रहा है। पहाड़ों पर खेती के लिए जल का आभाव है। यहां तक कि पहाड़ों पर रहने वाले पहाड़ियाओं को पीने के पानी के लिए दूर-दूर भटकना पड़ता है। ऐसे में पहाड़ पर सौर उर्जा से पीने की पानी की व्यवस्था कर शायद सरकार अस्तित्व पर होते इन हमलों का हर्जाना भर रही। पहाड़ों पर जलस्रोत खत्म होने के कारणों की ओर किसी का ध्यान नहीं। हां चंद गांवों में पीने की पानी की समस्या दूर करने के लिए सरकार ने सौर उर्जा से चलने वाली पानी टंकी का निर्माण किया है। जिसके कारण पेयजल की समस्या से कुछ गांव को फौरी राहत मिली है, लेकिन इस प्रयास की जमीनी हकीकत भी कुछ और है।

गोड्डा जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर दूर है बोआरिजोर प्रखंड। इस प्रखंड का एक पहाड़िया गांव है छोटा बोआरिजोर। इस गांव में कुछ वर्ष पहले 100 लोग रहा करते थे। आज यहां मात्र 15 परिवार और 60 लोगों की आबादी है। टाइफ्ड, हैजा, मलेरिया, जांडिस से लोगों की मौत होती गई। गांव के लोग बताते हैं यहां पानी लाना बड़ी चुनौती थी। लोग एक-दो किलोमीटर दूर से पानी लाते थे। पहाड़ों पर पहले झरनों की संख्या अधिक थी, समय के साथ प्राकृतिक जलस्रोत खत्म हो रहे। इसके पीछे एक बड़ा कारण पहाड़ों पर होता उत्खनन भी है। उस पर पीने के लिए साफ पानी की व्यवस्था कर पाना लोहे के चने चबाने की तरह है। ऐसे में 1992 में इस प्रखंड में गैर-सरकारी स्वयंसेवी संस्था 'साथी' ने अपना काम शुरू किया। संस्था के दीबानाथ बताते हैं कि संस्था ने बच्चों के अधिकार पर काम करने के साथ - साथ पानी की समस्या को दूर करने का भी प्रयास किया। साथी संस्था के प्रयास से बरसात का पानी को संरक्षित कर गांववाले उसका प्रयोग सालो भर करते हैं। गांव के ही आंगनबाड़ी केंद्र के उपर घेरा बनाकर बरसात का पानी एकत्र किया जाता है। इसे एक फिल्टर टैंक से जोड़ा गया है। एक कंक्रीट की टंकी भी बनायी गई है। बारिश होने पर पानी फिल्टर होकर कंक्रीट की टंकी में जमा होता है। इस पानी का उपयोग गांव के लोग विभिन्न कार्यों के लिए सालों भर करते हैं। यह इस क्षेत्र के लिए अभिनव प्रयोग था। इस मॉडल को सरकार ने भी पहाड़िया गांवों को पानी की समस्या से निजात दिलाने के लिए लिए अपना लिया। गांव में सरकारी स्तर पर डीप बोरिंग करायी गयी और पानी की टंकी बनायी गयी। यह पूरी पद्धति सौर उर्जा से संचालित है। जब से गांव में सरकार की ओर से सौर उर्जा से संचालित पानी का टैंक लगा है। गांव वाले पीने के पानी के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

सरकार की ओर से दूसरे प्रखंडों में भी सौर उर्जा से संचालित पानी टैंक बनाने की योजना चल रही। कहीं -कहीं इसका प्रयास भी किया जा रहा है। पहाड़ी गांवों में पहाड़ियाओं के लिए पानी की समस्या दूर करने के इस प्रयास में भी खामियां हैं। गांव के 20 वर्षीय युवक सुखमा पहाड़िया इसकी हकीकत बयां करता है। उसने बताया कि सरकार ने पानी की सुविधा के लिए इसी साल मई-जून में पानी का टैंक बनाया है। पर, इस व्यवस्था में समस्याएं हैं।

400 फीट का बोरिंग कराया गया, पर पाईप सिर्फ डेढ़ सौ फीट ही डाला गया। इस कारण कभी-कभी पानी आना बंद हो जाता है। गांव की सुनिता माल्टो कहती हैं कि ऐसा प्रयास सिर्फ कुछ ही गांवों में हुआ है। कुट्रिका गांव में भी सरकार सौर उर्जा से संचालित पानी टंकी बना रही है। वहां का काम अभी अधूरा है। पहाड़िया गांवों में पीने के पानी की कमी एक बड़ी समस्या है, जिसपर सरकार को ध्यान देना चाहिए। अतिरिक्त बीजली की समस्या भी है। गांवों में बिजली के खंभे भर गाड़े जा रहे हैं। उन खंभो पर लगे तारों से होकर बिजली गांवों तक नहीं पहुंचती। दूसरी ओर कई गांवों में आज भी पीने की पानी की समस्या बनी हुई है क्योंकि यह सरकारी योजना वहां अभी नहीं पहुंची है।

इसी गांव के माइसा पहाड़िया कहते हैं कि उसके बेटे की मौत एक सप्ताह पहले हो गई है। वे अपने बेटे का ईलाज कराने के लिए बोआरीजोर के सदर अस्पताल गये थे। वहां के डॉक्टर ने जांच के बाद कहा कि बेटे को किसी तरह की बीमारी नहीं है। बेटे को ईलाज के लिए गोड्डा ले जाने के लिए उन्होंने गाड़ी बुक करायी। गाय-बकरी बेच कर पैसे भी जुगाड़ किए लेकिन ईलाज से पहले ही बेटे की मौत हो गई। किसी को नहीं मालूम कि उसे क्या बीमारी थी। उन्होंने कहा कि पहाड़ों पर लोग ऐसे ही मरते जा रहे हैं। डॉक्टर बीमार लोगों को भी स्वस्थ बताते हैं। उनके द्वारा स्वास्थ्य घोषित लोग अनायास ही मर जाते हैं। विभिन्न कारणों से पहाड़ियाओं की संख्या घटती ही जा रही, जिस दिशा में किसी का ध्यान नहीं।

बोआरीजोर प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी विजय मरांडी कहते हैं कि प्रखंड में उनकी नियुक्ति कुछ दिन पहले ही हुई है। वे यहां की समस्याओं के प्रति गंभीर हैं। सरकारी कर्मचारियों की लापरवाही कतई बर्दास्त नहीं करेंगे। उनका प्रयास रहेगा कि यहां लोगों की समस्याएं दूर हों और उनके हक-अधिकार उन्हें मिले। पहाड़ों पर लोगों को सौर उर्जा के माध्यम से पानी की सुविधा देना सरकार की एक अच्छी पहल है लेकिन इससे भी पहले यह जरूरी है कि पहाड़ों पर मौजूद प्राकृतिक जल-स्रोतों को संरक्षण मिले। प्राकृतिक झरने और नदियां एक पूरी संस्कृति के इतिहास की गवाह होती हैं। ये पहाड़ों पर जीवन भरती हैं। जिनके कारण पहाड़िया पहाड़ों पर भी खेती-बाड़ी का काम करते हैं। उनके लिए आजीविका के साधन उपलब्ध होते हैं। लेकिन पहाड़ों पर नमी की कमी और खत्म होते जलस्रोत के कारण आजीविका के संसाधनों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे पहाड़ियाओं की पूरी जीवन शैली ही प्रभावित होती है। पहाड़ों पर जीवन बचा रहे इसके लिए जरूरी है प्राकृतिक-जलस्रोत बचे रहे।

सीएसडीएस द्वारा प्रदत इनक्लूसिव मीडिया यूएनडीपी फेलोशिप के तहत रिपोर्टिंग